www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress
WORLD खबर EXPRESS
WORLD खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER
शनिवार, 30-10-2021 अंक-392
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

पराली न जलाएं, खेत में ही सड़ाएं और मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र, दिलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ. भानु प्रताप सिंह ने किसानों को सलाह दी है कि धान की कटाई के बाद पराली न जलाएं, बल्कि मृदा (मिट्टी) में पराली को सड़ा-गला कर मृदा की उर्वरता बढ़ाएं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक किसानों को पराली जलाने के बारे में लगातार गांव-गांव जाकर जानकारी दे रहे हैं।

उन्होंने बताया कि मशीनों के प्रबंधन से इस पराली को जमीन के अंदर मिलाकर कार्बन की मात्रा बढ़ाने के साथ ही जल संरक्षण की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। किसानों को जागरूक करने के लिए उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा के 63 जिलों में वैज्ञानिक इस पर जोर-शोर से काम कर रहे हैं। डॉ. सिंह ने कहा कि देश में गेहूं के अंतर्गत 29.14 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल है तथा धान में 43. 79 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल है। पराली को जमीन में सड़ा-गला दिया जाए तो एक खाद का काम करेगी और जमीन की जल धारण क्षमता भी बढ़ेगी, जमीन में नाइट्रोजन की मात्रा भी बढ़ेगी। प्रदूषण कम होगा और खरपतवार भी नियंत्रण होगा। पैदावार की लागत घटेगी और पैदावार बढ़ेगी। ग्रीनहाउस गैसेस का उत्सर्जन भी कम होगा। इस अवसर पर डॉ. अनिल कुमार ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण कई प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, मल्चर बेलर, चापा आदि मशीनों के जरिए फसल अवशेष प्रबंधन करके जमीन की उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा सकती है। डॉ. कुमार ने बताया कि 25 प्रकार के मशरूम का उत्पादन धान के तना के माध्यम से कर किसान धन अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि धान के भूसे को पशुओं के चारा के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। अन्य चारों के साथ इसको प्रयोग में लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विभिन्न प्रकार की मशीनों का उन्होंने सुझाव दिया।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र
जनमत टुडे
वर्ष:12 | अंक:292 | देहरादून, शनिवार, 30 अक्टूबर, 2021 | पृष्ठ:08

पराली न जलाएं, बल्कि मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं

दीपक भट्ट (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र दिलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ. भानु प्रताप सिंह ने किसानों को सलाह दी है कि धान की कटाई उपरांत पराली न जलाएं बल्कि मृदा में पराली को सड़ा गला कर मृदा की उर्वरता बढ़ाएं उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक किसानों को पराली जलाने के बारे में लगातार एवं गांव गांव में जाकर जानकारी दे रहे हैं। उन्होंने बताया कि मशीनों के प्रबंधन से इस पराली को जमीन के अंदर मिलाकर कार्बन की मात्रा बढ़ाने के साथ ही जल संरक्षण की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है किसानों को जागरूक करने के लिए उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा की 63 जिलों में वैज्ञानिक इस पर जोर शोर से काम कर रहे हैं डॉक्टर सिंह ने कहा कि भारतवर्ष में गेहूं के अंतर्गत 29.14 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल है तथा धान में 43.79 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल है उन्होंने बताया कि पराली को जमीन में सड़ा गला दिया जाए तो एक खाद का काम करेगी तथा जमीन की जल धारण क्षमता भी बढ़ेगी जमीन में नत्रजन की मात्रा बढ़ेगी प्रदूषण कम होगा फिर खरपतवार भी नियंत्रण होगा पैदावार की लागत घटेगी व पैदावार बढ़ेगी ग्रीनहाउस गैसेस का उत्सर्जन भी कम होगा इस अवसर पर डॉ अनिल कुमार ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण कई प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है उन्होंने बताया कि हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, मल्चर बेलर, चापा इत्यादि मशीनों के माध्यम से फसल अवशेष प्रबंधन करके जमीन की उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा सकती है डॉक्टर कुमार ने बताया कि 25 प्रकार के मशरूम का उत्पादन धान के तना के माध्यम से करके किसान भाई धन अर्जित कर सकते हैं उन्होंने यह भी बताया कि धान के भूसे को पशुओं के चारा के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है तथा अन्य चारों के साथ इसको प्रयोग में लाया जा सकता है उन्होंने कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विभिन्न प्रकार की मशीनों का उन्होंने सुझाव दिया।

Sign in to edit and save changes to this file.

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक
वर्ष: 6, अंक : 203 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, रविवार
31 अक्टूबर, 2021
मूल्य ₹ 3.00
www.shashwattimes.com

पराली न जलाएं, बल्कि मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं: भानु प्रताप सिंह

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में आज क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र दिलीप नगर के वैज्ञानिक डॉक्टर भानु प्रताप सिंह ने किसानों को सलाह दी है कि धान की कटाई उपरांत पराली न जलाएं बल्कि मृदा में पराली को सड़ा गला कर मृदा की उर्वरता बढ़ाएं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक किसानों को पराली जलाने के बारे में लगातार एवं गांव गांव में जाकर जानकारी दे रहे हैं। उन्होंने बताया कि मशीनों के प्रबंधन से इस पराली को जमीन के अंदर मिलाकर कार्बन की मात्रा बढ़ाने के साथ ही जल संरक्षण की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। किसानों को जागरूक करने के लिए उत्तर प्रदेश, पंजाब,हरियाणा की 63 जिलों में वैज्ञानिक इस पर जोर शोर से काम कर रहे हैं। डॉक्टर सिंह ने कहा कि भारतवर्ष में गेहूं के अंतर्गत 29.14 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल है तथा धान में 43. 79 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल है। उन्होंने बताया कि पराली को जमीन में सड़ा गला दिया जाए तो एक खाद का काम करेगी तथा जमीन की जल धारण क्षमता भी बढ़ेगी जमीन में नत्रजन की मात्रा बढ़ेगी। प्रदूषण कम होगा फिर खरपतवार भी नियंत्रण होगा। पैदावार की लागत घटेगी व पैदावार बढ़ेगी। ग्रीनहाउस गैसेस का उत्सर्जन भी कम होगा। इस अवसर पर डॉ अनिल कुमार ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण कई प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है उन्होंने बताया कि हैप्पी सीडर,सुपर सीडर, मल्चर बेलर, चापा इत्यादि मशीनों के माध्यम से फसल अवशेष प्रबंधन करके जमीन की उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा सकती है डॉक्टर कुमार ने बताया कि 25 प्रकार के मशरूम का उत्पादन धान के तना के माध्यम से करके किसान भाई धन अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि धान के भूसे को पशुओं के चारा के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विभिन्न प्रकार की मशीनों का उन्होंने सुझाव दिया।

आज महानगर
कानपुर 31 अक्टूबर, 2021 5

पराली न जलाएं कृषक, मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं

कानपुर, 30 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में आज क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र दिलीप नगर के वैज्ञानिक डॉक्टर भानु प्रताप सिंह ने किसानों को सलाह दी है कि धान की कटाई उपरांत पराली न जलाएं बल्कि मृदा में पराली को सड़ा गला कर मृदा की उर्वरता बढ़ाएं। उन्होंने किसानों को पराली जलाने के बारे में लगातार एवं गांव गांव में जाकर जानकारी दे रहे हैं। मशीनों के प्रबंधन से इस पराली को जमीन के अंदर मिलाकर कार्बन की मात्रा बढ़ाने के साथ ही जल संरक्षण की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।